Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. VI, Issue No. XII, October-2013, ISSN 2230-7540

REVIEW ARTICLE

हिन्दी बाल साहित्य : आवश्यकता एवं महत्त्व

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. VI, Issue No. XII, October-2013, ISSN 2230-7540

हिन्दी बाल साहित्य : आवश्यकता एवं महत्त्व

Rekha Jodh[1] Dr. Rajesh Kumar[2]

[1]Research Scholar, Department of Hindi, Singhania University, Rajasthan

[2]Assistant Professor, Gyan Bharti of College, Indri, Karnal

----------X----------

बच्चे समाज का महत्त्वपूर्ण अंग हैं। बच्चों के अभाव में समाज की कल्पना भी नहीं की जा सकती। प्रसिद्ध अंग्रेजी साहित्यकार विलियम वर्ड्सवर्थ ने ठीक ही कहा है कि ष्जीम बैपसक पे जीम थ्ंजीमत व िडंदष् अर्थात् बच्चा इन्सान का पिता होता है।य कहने का तात्पर्य यह है कि बच्चें में इंसान के सभी गुण समाहित रहते हैं, जो धीरे–धीरे उसकी अवस्था के अनुसार उसमें विकसित होते हैं।

शैशवास्था में बालकों के शारीरिक विकास के साथ–साथ मानसिक विकास बहुत तीव्र गति से होता है। वे अपने चारों ओर की वस्तुओं का परिचय प्राप्त करना चाहते हैं। इस अवस्था में वे अपनी ज्ञानवृद्धि के लिए प्रयत्नशील रहते हैं। वे अपने मन में उठने वाले कौतूहल को शांत करने के लिए उपाय खोजते हैं। वे जिस–जिस वस्तु को देखते हैं, उस पर आकृष्ट होकर उसके विषय में विस्तृत ज्ञान प्राप्त करने की प्रबल इच्छा रखते हैं। ज्ञानोपार्जन तथा जिज्ञासा शांत करने की उनकी आकांक्षा इतनी तीव्र होती है कि पाठशाला में वह शांत नहीं हो पाती, अपितु उसके बाहर भी वे उसे संतुष्ट करने का साधन खोजते हैं। बच्चें अपनी पाठ्य पुस्तक अपने अनुकूल ही चाहते हैं, किन्तु आधुनिक शिक्षा–प्रणाली में यह संभव नहीं है। पाठ्यक्रम की पुस्तकें तो बच्चों को उपलब्ध ज्ञान ही कराती हैं, भले ही कुछ अंश उसमें उनकी रुचि के अनुकूल हो, किन्तु पूर्ण रूप से उनकी रुचि के अनुकूल पाठ्यक्रम बनाना संभव नहीं होता। अतः बाल साहित्यकारों को बच्चों की स्थिति के अनुरूप पाठ्य पुस्तकों के अतिरिक्त भी बच्चों के मनोरंजन व ज्ञानवर्धन के लिए उत्कृष्ट बाल साहित्य की रचना करनी पड़ती है।

बाल साहित्य से अभिप्राय :

बच्चों का बाल–साहित्य से सीधा सम्बन्ध होता है। बाल–साहित्य जहाँ एक ओर बच्चों को आदर्श नागरिक बनाने में सहायता प्रदान करता है, वहीं दूसरी ओर उसमें अच्छे संस्कार डालकर उनके भावी संसार की नींव मजबूत करता है। बच्चे अच्छे साहित्य से अनायास ही जुड़ते चले जाते हैं।

शब्द की दृष्टि से जब हम बाल–साहित्य पर विचार करते हैं तो पाते हैं कि 'बाल साहित्य' के निर्माण में 'बाल' और 'साहित्य' दो शब्द अपना योगदान दे रहे हैं, अर्थात् 'बच्चों का साहित्य'..... वह साहित्य जो बच्चों के मन और मनोभाव को परखकर उनकी भाषा में व उनके स्तर पर लिखा गया है, वही सही अर्थों कें 'बाल साहित्य' है। तात्पर्य यह है कि बच्चों को रुचिकर लगने वाला, उन्हें प्रेरणा देने वाला तथा उन्हें दिशा–निर्देश देने वाला साहित्य ही 'बाल साहित्य' कहलाने का अधिकारी है।

बच्चों का संसार सर्वथा अलग होता है। वे नैतिकता, नियम और शासन के बन्धनों से अपने को मुक्त मानते हैं। वे किसी अपफसर, पुलिस या नेता से न तो भयभीत होते हैं और न उसे कोई महत्त्व देते हैं। वे सभी को ज्ञान के मानदण्ड से ही मापते हैं। जिसमें सहृदयता होती है, उसे ही बच्चें अपना समझ लेते हैं। इसी तरह उनका साहित्य भी भिन्न होता है। जिस साहित्य में उनके मन के अनुकूल भाव होते हैं, उसे ही वे स्वीकार कर लेते हैं और वही 'बाल साहित्य' है।

बाल साहित्य की परम्परा :

बाल–साहित्य का इतिहास बहुत पुराना है। प्रारम्भ में बड़ों के लिए जो साहित्य लिखा जाता था, बच्चे भी उसमें से अपनी मतलब की सामग्री छांट लिया करते थे। सूरदास और तुलसीदास की क्रमशः कृष्ण और राम विषयक रचनाएँ इसका प्रमाण हैं। सूर और तुलसी ने बाल–साहित्य पर कुछ भी नहीं लिखा, परन्तु इनकी रचनाओं में बाल–साहित्य के अनेक तत्त्व छिपे हुए हैं।

बाल–साहित्य की विधिवत शुरूआत भारतेन्दु युग से होती है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की प्रेरणा से 1882 में 'बाल–दर्पण' नामक बच्चों की पहली पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ था। स्वयं भारतेन्दु ने 'बाल–बोधिनी' नाम से महिलाओं की पत्रिका निकाली थी, जिसमें बालिकाओं के लिए सिलाई, कढ़ाई, चूल्हा–चौका तथा अन्य सामाजिक विषयों पर रोचक सामग्री प्रकाशित कर जाती थी। आज बाल साहित्य की विकास यात्राा एक शताब्दी पार कर चुकी है।

बाल–साहित्य को मुख्यतः दो भागों में बांटा जा सकता है। एक तो स्वतन्त्राता से पूर्व का बाल–साहित्य, जिसे हम परम्परागत बाल–साहित्य कह सकते हैं। यह साहित्य मौखिक स्वरूप से लिखित स्वरूप तक विकसित हुआ और आज भी हो रहा है। दूसरा स्वातन्त्रयोत्तर बाल–साहित्य है। यह आधुनिक परिवेश और बाल–मनोविज्ञान को ध्यान में रखकर लिखा जा सकता है।

बाल–साहित्य को दो वर्गों में बांटने से बाल–साहित्य की महत्ता कम नहीं होती है। बाल–मन की जिज्ञासा को शान्त करने के

www.ignited.in

लिए परम्परागत तथा प्रयोगात्मक दोनों प्रकार का बाल–साहित्य आवश्यक एवं उपयोगी है।

बाल–साहित्य की मौलिक आवश्यकता है– मनोरंजन, भाषा की सरलता, कथा में सद्विचार तथा ज्ञान। परम्परागत बाल–साहित्य में इन सब तत्त्वों का भरपूर समावेश है। इस साहित्य की आज भी भरपूर उपयोगिता है, चाहे वह साहित्य पहले लिखा गया है या पिफर अब लिखा जा रहा हो।

दूसरा साहित्य जोकि स्वतन्त्रयोत्तर बाल–साहित्य ही नहीं बल्कि आधुनिक साहित्य भी है। इस बाल–साहित्य के अंतर्गत विषयों की विविधता, ज्ञानवर्धक सामग्री को महत्त्व दिया जा रहा है। आज बच्चों के सामने इलैक्ट्रॉनिक मीडिया ने ज्ञान तथा मनोरंजन की अनेक सामग्री प्रस्तुत कर रहा है। ऐसी स्थिति में बाल–साहित्य ही उनकी विज्ञासाओं को शान्त कर सकता है।

अतः साहित्यकारों ने स्वतन्त्राता के पश्चात् ही बाल–साहित्य के मानदण्डों में विशेष परिवर्तन की आवश्यकता महसूस की। इस स्थिति में बाल–साहित्य बच्चों के लिए महत्त्वपूर्ण प्रतीत होने लगा। मनोरंजन के साथ–साथ बाल–साहित्य बच्चों में मानसिक विकास, राष्ट्रीय चेतना, वैज्ञानिक दृष्टिकोण आदि की अनिवार्यता अनुभव की गई। इस प्रकार से स्वतन्त्राता के बाद ही बाल–साहित्य की परम्परा प्रकाश में आई और जो आज अपनी चरम सीमा पर है। आज बाल–साहित्य सभी विधाओं के अंतर्गत बच्चों का मनोरंजन ही नहीं कर रहा है, बल्कि उन्हें विज्ञान से भी जोड़ रहा है।

हिन्दी बाल–साहित्य की विकास यात्राा :

हिन्दी बाल–साहित्य की पृष्ठभूमि तैयार करने में संस्कृत के बाल–साहित्य का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। 'पंचतंत्रा' तो विश्व की अनेक भाषाओं के बाल–साहित्य को प्रभावित करने वाली पुस्तक सि(हुई है। इसके साथ ही भारतीय लोक साहित्य ने अपनी रचना के माध्यम से बाल–साहित्य को समृ(बनाया। हिन्दी की प्रायः सभी प्रमुख बोलियों में पर्याप्त मात्राा में उपलब्ध बाल–साहित्य इस कथन की पुष्टि करता है।

हिन्दी में बाल–साहित्य का आरम्भिक रूप महाकवि सूरदास के फ्बाल–लीला गीतों में भी देखने का प्रयास किया गया है। यह भ्रम केवल इसलिए होता है, सूरदास ने अपने बाल–लीला गीतों में बाल स्वभाव के जिस मनोवैज्ञानिक रूप को प्रस्तुत किया है, वैसा आज तक कोई नहीं कर सका किन्तु इस तथ्य को स्वीकार भी कर लें तो इतना स्पष्ट है कि उन बाल–लीला गीतों में बाल स्वभाव का चित्राण बड़ों के लिए था जिससे वात्सल्य रस की उत्पत्ति होती है न कि बालकों का मनोरंजन होता है।

बीसवीं शताब्दी के आरम्भ से ही विदेशी बाल–साहित्य में क्रान्तिकारी परिवर्तन होने लगे थे। इस परिवर्तन ने भारतीय लेखकों का भी ध्यान खींचा। लेखकों ने सोचा स्कूली साहित्य के अलावा कुछ ऐसा भी लिखा जाए जिससे मनोरंजन हो और बच्चों का मानसिक और शारीरिक विकास हो। ऐसी पुस्तकों को बच्चें खूब पढ़ेंगे। इस तरह अनेक लेखक बाल–साहित्य की रचना के विचार से आगे आये।

हिन्दी बाल–साहित्य के क्रमिक को अध्ययन की सरलता के लिए विभिन्न युगों में विभाजित कर लेना अध्कि उपयुक्त होगा। पूरे विकास क्रम को विभिन्न युगों में इस प्रकार विभाजित किया जा सकता है–

1. भारतेन्दुपूर्व युग : सन् 1845 से 1873 तक
2. भारतेन्दु युग : सन् 1874 से 1900 तक
3. द्विवेदी युग : सन् 1901 से 1930 तक
4. गांधी युग : सन् 1931 से 1946 तक
5. स्वातन्त्रयोत्तर युग : सन् 1947 से 1960 तक
6. वर्तमान युग : सन् 1961 से अब तक

बाल–साहित्य के प्रकार :

बालक प्रकृति के जिज्ञासु होते हैं। जीवन के सब कुछ को जान लेने की अदम्य आकांक्षा न केवल उन्हें परिवार और समाज से सब कुछ प्राप्त करने की प्रेरणा देती है अपितु बाल–साहित्य के अनुशीलन से भी वह अपनी ज्ञान–क्षुधा को तृप्त करना चाहता है। बच्चों की ग्रहण क्षमता सीमित होते हुए भी सभी सीमाओं के बांध तोड़ देने के लिए तत्पर रहती है और अपने आयु वर्ग से आगे जाकर बातों को समझ लेने का संकल्प भी उसके मन में अक्सर दुहरता रहता है।

प्रायः बाल–साहित्य सभी विधाओं में लिखा जाता रहा है। बाल–साहित्य में जहाँ बाल–काव्य अपनी चरम सीमा पर है, वही बाल–नाटक, एकांकी, बाल उपन्यास तथा वैज्ञानिक साहित्य भी लिखा जा रहा है। बाल–साहित्य में प्रत्येक विधा के द्वारा साहित्यकार बच्चों के ज्ञान में वृ(ही नहीं कर रहे हैं बल्कि उन्हें आधुनिक समाज में जोड़ने का भी प्रयास कर रहे हैं।

डॉ॰ हरिकृष्ण देवसरे ने बाल–साहित्य के प्रकार को निम्न प्रकार से किया है।

1. बाल गीत
2. बाल कहानियाँ
3. बाल–नाटक
4. बाल–उपन्यास
5. बाल–जीवनी साहित्य आदि।[2]

व्यापक पर्यवेक्षण के बाद हिन्दी बाल–साहित्य का विधागत रूप में इस प्रकार विभाजित किया जा सकता है–

1. बाल काव्य एवं बालगीत
2. बाल कहानियाँ
3. बाल नाटक
4. बाल एकांकी,
5. बाल उपन्यास
6. बाल जीवनी साहित्य
7. बाल वैज्ञानिक साहित्य आदि

www.ignited.in

बाल साहित्य की आवश्यकता :

आज के परिवेश में बच्चें की जिज्ञासा का क्षितिज बहुत विस्तृत हो गया है। अब उसे किसी वस्तु या विषय के बारे में बता भर देने से तृप्ति नहीं मिलती। वह क्या, क्यों और कैसे? से अपनी जिज्ञासा का अन्तिम समाधन चाहता है। बच्चों का आधुनिक परिवेश इतना व्यापक तथा
विविध्तापूर्ण हो गया है कि माता–पिता, अध्यापक तथा पाठ्य पुस्तकें उसकी समस्त जिज्ञासाओं का
समाधन नहीं कर पाते। बच्चों के चतुर्मुखी विकास के लिए विविध्तापूर्ण बाल साहित्य अत्यन्त आवश्यक है। इसके साथ–साथ बच्चों के चारित्रिाक तथा मानसिक विकास के लिए भी बाल साहित्य अत्यन्त आवश्यक है। बाल साहित्य मनोरंजन के साथ–साथ आदर्श जीवन तथा अन्य संस्कार निहित होते हैं जिस का बाल मन पर गहरा प्रभाव पड़ता है।

बच्चे सचेतन व जागरूक होते हैं। आज समाज में बच्चों की समस्याओं को समझना और उनके लिए सम्भव हल खोजना अति आवश्यक है। यह समझना गलत है कि बच्चों की अपनी कोई समस्या नहीं होती। बच्चों के मन में अनेक ऐसी गुत्थियाँ होती हैं जिनके समाधन के लिए बच्चें प्रयत्नशील होते हैं। यदि उन्हें इनके प्रति आवश्यक निर्देश नही प्राप्त होते हैं तो वे गलती पर गलती करते जाते हैं। अतः इन सब बुराइयों को दूर करने के लिए बाल साहित्य अति आवश्यक है, जिससे बच्चों की शंका का समाधन हो सके।

युग परिवर्तन व समय के साथ–साथ न केवल जीवन जीने की कला में परिवर्तन आया बल्कि उसका प्रभाव बच्चों पर भी पड़ा। अब से 300 वर्षों पहले की बात लें और आज की बात लें। दोनों ही बातों में बहुत अन्तर पाते हैं। आज समाज व संसार बहुत आगे बढ़ रहा है। आज के बच्चे भी पहले जैसे नहीं रहे। बच्चों में भी स्वाभाविक रूप से वर्तमान के प्रति आकर्षण, सजगत और जिज्ञासा का भाव है। अतः इस दृष्टि से भी बाल साहित्य की आवश्यकता महसूस की जाती है।

देश की भावी पीढ़ी को सृजनात्मक आशावादी उद्बोध्न करते हुए सद्मार्ग की ओर प्राप्ति करने वाले साहित्यकारों की विशद परम्परा रही है। साहित्यकार एक जागरुक प्राणी होता है। इस दायित्व का निर्वाह वह खूबी के साथ करता है।3

प्रत्येक भाषा के साहित्य में बाल साहित्य का अप्रतिम स्थान होता है। समाज के व्यक्तियों पर साहित्य का सीध प्रभाव पड़ता है। बाल–साहित्य को समृ(बनाने के लिए अनेक सहित्यकारों ने अपना सक्रिय योगदान दिया है। बाल साहित्य सृजन के ध्येय के प्रति कुछ विचार प्रस्तुत हैं।

बच्चे परिस्थितियों का ज्ञान सबसे पहले देख सुन और समझकर उतना प्राप्त नहीं करते, जितना शारीरिक चेष्टाओं और स्पर्श के आधर पर प्राप्त करते हैं। वह जिस वस्तु को देखते हैं, उसे हाथ में लेकर, तोड़कर, नोचकर या खोलकर भी देखना चाहते हैं। देखने मात्रा से उनकी जिज्ञासा शान्त नहीं होती जैसी– पूफल का उदाहरण, छोटे बड़े, बाल कृष्ण और चाँद, शारीरिक चेष्टाएं, व्यर्थ की उछलकूछ पर थकते नहीं। उनकी इस प्रकार की चेष्टाओं से ही उनके गढ़े हुए उस बाल गीत साहित्य का निर्माण होता है जो कभी छपता है, न प्रकाशित होता है, पर निरन्तर गाया दुहराया जाने के कारण वह धीरे–धीरे बच्चों के समाज में पफैल जाता है और शताब्दियों तक उनका मनोरंजन करता रहता है।4

बाल साहित्य सृजन अगर बच्चों की रुचियों और आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर किया जाए तो वह उनके लिए बहुत ही लाभदायक एवं उपयोगी सि(होता है। इनकी दृष्टि से बच्चों की अवस्था ज्यों–ज्यों बढ़ती जाती है, त्यों–त्यों वे नई वस्तुओं के सम्पर्क में आते हैं। उन वस्तुओं के विषय में विस्तृत जानकारी प्राप्त करने की उनकी जिज्ञासा होती है। बाल सहित्यकार को बालक बनकर बालकों की जिज्ञासा का समाधन करना चाहिए। बाल साहित्य का सृजन जहां बालकों के मनोरंजन के लिए किया जाता है, वहीं वह साहित्य उनके ज्ञानवर्(न में सहायक होता है।

साहित्य के विषय में हमारे भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ॰ राधकृष्णन के विचारों के अनुसार बच्चों का साहित्य का साद्देश्य सृजन है। मानवीय एकता, मानवीय सहयोग और इस संसार को अध्कि सुन्दर बनाना प्रत्येक विकसित बाल व्यक्तित्व का कर्त्तव्य है और प्रत्येक बालक को यह प्रेरणा देना बाल साहित्य का कर्त्तव्य है। समस्त बाल साहित्य प्रौढ़ पूर्वाग्रहों एवं निश्चित धरणाओं से मुक्त होना चाहिए।5

बाल साहित्य बच्चों की उलझी हुई कुण्ठित मनोभावनाओं को सुलझाकर उन्हें परिष्कृत मनोभावनाओं वाला व स्वस्थ मन का मनुष्य बनाता है। मानसिक गुत्थियों के न रहने और मनोभावों का निरन्तर परिष्कार होते रहने से ही बच्चा सुदृढ़ इच्छा शक्ति वाला, साहसी तथा विवेकशील मनुष्य बनता है। ज्ञान का संसार तो असीम व अपार होता है उससे आत्मबोध् के लिए बाल साहित्य अति आवश्यक है।

बाल साहित्य का महत्त्व :

यूं तो जीवन में हर अवस्था विकास की दृष्टि से मूल्यवान होती है, परन्तु बाल्यावस्था का दौर सर्वाध्कि महत्त्वपूर्ण और कहीं अध्कि निर्णयात्मक होता है। बचपन ही भविष्य की नींव होती है। बचपन ही वह अवस्था होती है जब बच्चों के मन में अपनी संस्कृति के प्रति प्रेम तथा मानवीय मूल्यों का बीजीवपन होता है। प्रायः बच्चों का पालन–पोषण जिस प्रकार के वातावरण में होता है वह उसी के अनुरूप मानसिकता वाले होते हैं और उसी आचरण तथा व्यवहार के अनुरूप कार्य करते हैं। इसलिए बच्चों में अच्छे संस्कार के लिए बाल–साहित्य का अध्कि महत्त्व है।

बाल साहित्य का मुख्य आधर जीवन है वह जीवन जो शिशुओं, बच्चों तथा किशोरों के चारों ओर नाना रूपों में भास्वर है। जीवन के ये अनुभव वे होते हैं जिन्हें बाल साहित्य के रचनाकार अपने बचपन में अपने परिवार, मित्रा मण्डली और आस–पास पैफले समाज से प्राप्त करते हैं। यही सरलता और कोमलता जैसे भाव उनका दुलार करते हैं और कटुता तथा कुटिलता से उनका साक्षात्कार होता है। बचपन की यह अनुभव यात्राा जीवन भर चलती है। बाल मन कोमल, संवेदनशील तथा सहज प्रभाव ग्रहण करने वाला होता है और बाल साहित्य बच्चों के चरित्रा को दिशा और संदेश देता रहता है।

आज के इस भौतिक रूप से समृ(परिवेश में बाल मन कल्पना जगत् से कट नहीं पाता। आज भी वह ऐतिहासिक, पौराणिक, धर्मिक तथा लोक कथाओं को बड़े ध्यान से सुनता है। इस प्रकार बाल साहित्य आज भी बच्चों के लिए वैसा ही लोकप्रिय

है जितना प्राचीनकाल में था। वास्तव में बच्चें साहित्य, समाज और संस्कृति के लिए नवागत के रूप में होते हैं। यह सच है कि प्रत्येक युग की अपनी विशिष्टताएँ होती हैं, किन्तु बच्चों का उसमें निश्चित महत्त्व होता है। आज जहां हम लोगों को प्रस्तर–युग से निकले हुए देखते हैं वहीं दूसरी ओर नई विचारधरा, नई खोज तथा जीवन के नये मूल्यों को लिए हुए पाते हैं। इसी परम्परा में बच्चों के जीवन और उनकी समस्याओं का रूप भी उतनी ही वैविध्य लिए हुए है। अतः इन सब के समाधन के लिए बाल साहित्य अत्यन्त उपयोगी है।

बच्चें स्वभाव से ही समझदार और संवेदनशील होते हैं। पिफर भी उन्हें भावात्मक रूप से उचित संरक्षण की आवश्यकता होती है। इसीलिए उन्हें अपने परिवेश से सम्बन्धित साहित्य ही उचित लगता है। प्रायः बच्चों की कल्पना इतनी उर्वर होती है कि थोड़े से संकेतों के आधर पर ही किसी कहानी के पात्रों से तादात्मय स्थापित कर लेते हैं। बच्चों की जिज्ञासा इतनी बलवती और कल्पना इतनी प्रखर एवं विस्तृत होती है कि उनकी भावना विश्व के हर जीवन को छूती है और निरन्तर कुछ जानना चाहती है। अतः इस भावना को शान्त करने के लिए बाल साहित्य का बाल जीवन में अपना विशेष महत्त्व है।

बच्चों के मानसिक विकास को समझने के लिए बाल साहित्य की भाषा का भी विशेष महत्त्व है। बच्चों का विकास पुस्तकें पढ़ने से अध्कि तीव्रता से होता है। इसीलिए बच्चों में पढ़ने की रुचि का विकास आवश्यक है। पढ़ना केवल बौ(िक अनुभव नही है बल्कि उसके द्वारा भावात्मक अनुभवों की भी प्राप्ति होती है। पढ़ने से हास्य, रुचि, प्रसन्नता, उत्साह और महत्त्वाकांक्षा का विकास होता है। इससे बच्चों के व्यक्तित्व का विकास होता है साथ में बौ(िक ज्ञान की भी वृ(होती है। अतः जीवन आनंदमय बनाने के लिए बाल साहित्य का सर्वाध्कि महत्त्व होता है।

इस युग में बाल साहित्य को इतना अध्कि महत्त्व दिया गया है जब कि पहले बच्चों के लिए इतनी अध्कि साहित्य सृजन नहीं हुआ। अब बहुत कम ही ऐसे घर होंगे जहाँ कोई दैनिक पत्रा न आता हो और धीरे–धीरे पत्रिाकाओं को भी खरीदने की संख्या बढ़ रही है। बाल पुस्तकों को देखने व पढ़ने में बच्चों की एक सहज प्रवृत्ति होती है। यदि बच्चों को कुछ नये आदर्श, संस्कार तथा नये कीर्तिमान का कार्य अगर करने में समर्थ है तो वह बाल साहित्य है। बाल साहित्य ही बच्चों की मनोभावों, इच्छाओं व आकांक्षाओं को दिशा रूप देने में समर्थता रखता है तभी तो बाल साहित्य बाल मन के लिए महत्त्वपूर्ण है।

निष्कर्ष :

बच्चों के मन और मनोभावों को परखकर व उनके स्तर पर लिखे गये साहित्य को सही अर्थों में बाल–साहित्य कहते हैं। बाल–साहित्य का इतिहास बहुत पुराना है। इस सदी के आरम्भ में द्विवेदी युगीन साहित्यकारों ने बाल–साहित्य की ओर ध्यान दिया और बाद के साहित्यकारों ने भी इस शृंखला को आगे बढ़ाया है। आरम्भ से ही बाल–साहित्य का सृजन विविध्मुखी रहा है। साहित्यकारों ने विविध्मुखी बाल–साहित्य का सृजन किया है। विविध्मुखी बाल–साहित्य के अंतर्गत बाल–काव्य एवं बाल–गीत, बाल–कहानियाँ, बाल–नाटक, बाल–उपन्यास, बाल–एकाँकी, बाल–जीवनी, बाल वैज्ञानिक साहित्य आदि रचा गया है। वस्तुतः बच्चों का बाल–साहित्य से सीध सम्बन्ध होता है। बाल–साहित्य जहाँ एक ओर बच्चों को आदर्श नागरिक बनाने में सहायता करता है वहीं दूसरी ओर बच्चों में अच्छे संस्कार डालकर उनकी भावी जीवन की नींव मजबूत करता है। अतः कहा जा सकता है कि हिन्दी बाल साहित्य प्रेरक व चरित्रोन्नयन के साथ–साथ शिक्षापरक भी है जिसमें बच्चों को पाठ्यक्रम सम्बन्धी ज्ञान, पशु पक्षियों की बोली सम्बन्धी शिक्षा, नीति सम्बन्धी ज्ञान, मनोरंजन आदि के साथ–साथ बच्चों का सर्वांगीण विकास ही ध्येय है क्योंकि आज के बच्चे ही कल का भविष्य है। आज बाल साहित्य पूर्ण रूप से अपने प्रगति पथ की ओर अग्रसर है।

आधर सूची :

1. डॉ॰ सुरेन्द्र विक्रम, हिन्दी बाल साहित्य विविध् परिदृश्य, पृ. 47
2. डॉ॰ हरिकृष्ण देवसरे, हिन्दी बाल साहित्य : एक अध्ययन, पृ. 237
3. श्रीमती ज्योत्सना शर्मा का शोध् प्रबध्, 'बाल साहित्यकार श्री चन्द्रपाल सिंह 'मयंक' एवं उनकी साध्ना के विविध् आयाम के पृ. 120 से उध्ृत।
4. निरंकार देश सेवक, बाल गीत साहित्य, पृ. 21–22
5. डॉ॰ राधकृष्णन्, इन ओगुरेशन ऑपफ डीवेल्स म्युजियम बाई, हिन्दुस्तान टाईम्स ;अंग्रेजी अखबारद्ध

www.ignited.in